

भारतीय महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता

संदर्भ:

हाल ही में “लोकनीती CSDS (Centre for Study of Developing Societies) और कोनराड एडेनॉयर स्टफिंग (Konrad Adenauer Stiftung)” ने एक सर्वेक्षण रिपोर्ट जारी की, जिसमें भारतीय महिलाओं और उनकी राजनीतिक सक्रियता से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन किया गया।

सर्वेक्षण के मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार हैं:

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी:

- सर्वेक्षण में पाया गया कि महिलाओं की चुनावी भागीदारी में उनकी सामाजिक व आर्थिक स्थितिका विशेष प्रभाव होता है। उच्च सामाजिक वर्ग (जाती) व आर्थिक वर्गों की महिलाओं में राजनीतिक भागीदारी अधिक पाई गई, जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक तबके की महिलाओं में यह भागीदारी अत्यधिक कम थी।
- हालाँकि पिछले कुछ वर्षों में चुनावों में मतदाता के रूप में महिलाओं की भूमिका बढ़ी है। अनेक राज्यों में हुए विभिन्न चुनावों में महिलाएँ पुरुषों के समान मतदान कर रही हैं, जबकि कई स्थानों पर वे पुरुषों की तुलना में अधिक मतदान कर रही हैं।
- इसके अलावा महिलाएँ अपनी राजनैतिक पसंद को लेकर भी स्वायत्त हो रही हैं कति यह प्रचलन भी शहरी क्षेत्र की तथा शक्ति महिलाओं में अधिक देखा गया।

राजनीति में पुरुषों का वर्चस्व:

- इस सर्वेक्षण के माध्यम से यह ज्ञात हुआ कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में पुरुषों का वर्चस्व मुख्य बाधकों में से एक है। 50 वर्ष से अधिक उम्र की दो-तर्हई महिलाओं का मानना है कि पुरुषों के राजनीतिक वर्चस्व के कारण महिलाओं को राजनीति में अवसर नहीं मिलता, जबकि 20-25 वर्ष की आधी महिलाओं की राय इसके विपरीत है।
- इसके अलावा अधिकांश महिलाओं का मानना है कि भारतीय मतदाता महिलाओं की तुलना में पुरुष उम्मीदवारों के पक्ष में अधिक मत देते हैं।
- राजनीतिक अवसरों में किसी चुनाव लड़ना, राजनीतिक दल का टिकट मलना तथा चुनाव जीतने की प्रायकिता आदि को शामिल किया गया है।

सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि:

- सर्वेक्षण के माध्यम से यह पता चला कि किसी महिला के लिये राजनीति में भाग लेने के लिये उसकी पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण है। अधिकांश महिलाओं ने यह माना कि ऊँची जातकी महिलाओं के लिये राजनीति में हिस्सा लेना आसान है, जबकि निम्न जातकी महिलाओं के लिये यह तुलनात्मक रूप से कठिन है।
- इसके अलावा राजनीतिक पृष्ठभूमिवाली महिला के लिये किसी गैर-राजनीतिक पृष्ठभूमिवाली महिला की तुलना में राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लेना आसान है।

घरेलू स्तर पर राजनीतिक नरिणयन में पतिसत्ता का प्रभाव:

- अधिकांश महिलाओं का मानना है कि घरों में राजनीतिक नरिणयन लेने में उन्हें कम स्वायत्तता प्राप्त होती है। इसका मुख्य कारण पतिसत्तात्मक समाज तथा रूढ़िवादी सामाजिक ढाँचा है।

राजनीतिक समाचारों में रुचि:

- इस सर्वेक्षण द्वारा यह पाया गया कि 71% महिलाओं ने विभिन्न माध्यमों से राजनीतिक समाचारों को पढ़ने में रुचि प्रदर्शित की। ये माध्यम मीडिया, न्यूज़ चैनल, सोशल मीडिया, व्हाट्सएप आदि हो सकते हैं।
- समाचारों में रुचि भी महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के अनुसार प्रभावित होती है। उच्च सामाजिक-आर्थिक वर्ग की महिलाओं में यह प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है।

- इसके अलावा कम उम्र की कॉलेज में पढ़ने वाली, अवविाहति तथा शहरी महिलाओं में राजनीतिक समाचारों के प्रतिक्रिया अधिक होती है।

सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीतिक भागीदारी:

- सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीति में भागीदारी करने के मामले में महिलाओं की संख्या काफी कम है।
- सर्वेक्षण में केवल 17% महिलाओं ने स्वीकार किया कि वे किसी भी प्रकार से सोशल मीडिया पर राजनीतिक रूप से सक्रिय हैं, जबकि 83% महिलाओं ने कहा कि सोशल मीडिया पर राजनीतिक रूप से बिल्कुल सक्रिय नहीं हैं।

राजनीतिक भागीदारी में महिलाओं की स्वायत्तता:

- हालाँकि विगत कुछ वर्षों में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई है लेकिन सर्वेक्षण में लगभग 66% महिलाओं ने कहा कि वे राजनीतिक नरिणय लेने के मामले में अभी भी स्वायत्त नहीं हैं।

राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी के नमिनलखिति कारण हैं:

पतृसत्तात्मक समाज:

- राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी के मुख्य कारणों में पतृसत्तात्मक समाज तथा इसकी संरचनात्मक कमियाँ हैं। इसकी वजह से महिलाओं को कम अवसर मिलते हैं तथा वे राजनीतिक प्रतस्पर्द्धा में पुरुषों से काफी पीछे रह जाती हैं।
- लगभग एक-तहाई महिलाओं ने पतृसत्तात्मक समाज को उनकी राजनीतिक भागीदारी में बाधा के रूप में देखा।

घरेलू जमिमेदारियाँ:

- सर्वेक्षण में अधिकांश महिलाओं ने स्वीकार किया कि घरेलू जमिमेदारियाँ जैसे- बच्चों की देखभाल, घर के सदस्यों के लिये खाना बनाना व अन्य पारिवारिक कारणों से वे राजनीति में भाग नहीं ले पाती।
- लगभग 13% महिलाओं ने राजनीति में उनकी कम भागीदारी के लिये घरेलू जमिमेदारियाँ को कारण माना।

व्यक्तगत कारण:

- कई महिलाएँ व्यक्तगत कारणों की वजह से भी राजनीति में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेती। ये व्यक्तगत कारण हैं- राजनीति में रुचि न होना, जागरुकता का अभाव, शैक्षिक पछिड़ापन आदि।
- लगभग 10% महिलाएँ व्यक्तगत कारणों से राजनीति में हसिसा लेने में सक्रिय नहीं हैं।

सांस्कृतिक प्रतर्बिंध एवं रूढविाद:

- सांस्कृतिक मानदंडों तथा रूढविादति के कारण भी महिलाएँ राजनीति में भाग नहीं ले पाती। सांस्कृतिक प्रतर्बिंधों में पर्दा प्रथा, किसी अन्य पुरुष से बातचीत न करना, महिलाओं का बाहर न निकलना आदि शामिल हैं।
- लगभग 7% महिलाओं ने माना कि सांस्कृतिक कारणों से वे राजनीति में भाग नहीं लेती।

सामाजिक-आर्थिक कारण:

- कमजोर सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि भी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में अवरोध उत्पन्न करते हैं।

राजनीतिकी नकारात्मक छवि:

- आम लोगों में राजनीतिकी नकारात्मक छवि तथा इसमें व्याप्त भ्रष्टाचार की वजह से भी महिलाएँ राजनीति में कम रूचि लेती हैं।

महिलाओं को लेकर राजनीतिकी दलों की उदासीनता:

- राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को लेकर देश के राजनीतिकी दलों तथा सरकारों ने उदासीनता प्रदर्शति की है।
- प्रसतावति महिला आरक्षण वधियक (Women Reservation Bill), जो कि संसद तथा राज्य की वधानसभाओं में महिलाओं के लिये आरक्षण का प्रावधान करता है, को पारति करने में सभी राजनैतिकी दल नरित्साहति प्रतीत होते हैं। \
- इसका मुख्य कारण यह है कि पुरुष राजनीतिजिजों को इस बात का भय रहता है कि महिलाओं के नरिवाचन से उनके दोबारा चुने जाने की संभावना कम या समाप्त हो सकती है जिसके लिये वे तैयार नहीं हैं।

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हेतु आवश्यक उपाय:

संसद में महिलाओं के लिये आरक्षण:

- हालाँकि भारतीय संविधान में 73वें और 74वें संशोधन द्वारा महिलाओं के लिये स्थानीय निकाय की एक-तहई सीटों के आरक्षण का प्रावधान किया गया है लेकिन राजनीति में महिलाओं की समान भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये अन्य प्रयास किये जाने की भी आवश्यकता है।
- महिलाओं को लोकसभा और सभी राज्यों की विधानसभाओं में 33% आरक्षण प्रदान करने संबंधी महिला आरक्षण विधेयक को तत्काल पुरःस्थापति एवं पारित किये जाने की आवश्यकता है।

राजनीतिक दलों में महिलाओं के लिये आरक्षण:

- यद्यपि यह कदम महिला सांसदों की संख्या में वृद्धि के संबंध में कोई ठोस आश्वासन प्रदान नहीं करता है कति राजनीति में महिलाओं की पर्याप्त संख्या सुनिश्चित करने के लिये यह ठोस कदम हो सकता है।
- विश्व के कई देशों में यह प्रावधान किया गया है जैसे- स्वीडन, नॉर्वे, कनाडा, ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस आदि।

महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु माहौल प्रदान करना:

- राजनीति में अन्य विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिये आवश्यक है कि समाज में प्रत्येक स्तर पर महिला सशक्तीकरण तथा उनकी सामुदायिक भागीदारी के लिये प्रयास किये जाएँ ताकि उनमें आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता आदि गुणों का विकास हो।

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/political-activeness-of-indian-women>

